M.A. IV Sem

3087

Theoretical Perspective

किसी भी समाज का अध्ययन करने से पूर्व यह तय करना होता है कि उसके लिये कौन सी Theoritical apporach या perspective का प्रयोग किया जाये। भारतीय समाज का अध्ययन करने के लिये अनेक approaches का प्रयोग किया गया जिसमें निम्न हैं –

INDOLOGICAL / TEXTUAL PERSPECTive
भारत विद्या / पाठ्यमयी परिप्रेक्ष्य

इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार भारतीय समाज का अध्ययन ~~कहीं कहीं~~ ऐतिहासिक तुलनात्मक पद्धति तथा भारत विद्या के आधार पर किया जाता है। इसमें सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन, प्राचीन भारतीय इतिहास, पुराणों, धर्मग्रन्थों एवं शास्त्रों के आधार पर किया जाता है।

भारत-विद्या-शास्त्री परिप्रेक्ष्य

G. S. Ghurye भारत के प्रथम पीढ़ी के समाजशास्त्रियों में थे।
Birth - 12 Dec 1893, महाराष्ट्र के मालवा क्षेत्र के सारस्वत ब्राह्मण परिवार
1918 में Sanskrit & English में Mumbai के Elfisteen college से
1919 में Mumbai University में Sociology पढ़ाने के लिये Proff. Patric Giddings. को आमंत्रित किया, उस समय Ghurye Sanskrit पढ़ाते थे, Giddings ने Ghurye को Sociology का प्रशिक्षण के लिये लन्दन भेजा।
Cambridge University में डा० रिवर्स के supervision में अपना thesis on topic - "Ethnic Theory of Caste"
Ghurye का झुकाव - मानवशास्त्र और प्रसारवाद की ओर था।
1924 - Mumbai University, Dept of Sociology, Reader
1934 - Head, 1959, Retirement

works of Ghurye

The Schedule Tribes in India 1963
Social Tensions in India 1968
Caste Class & Occupation 1961
Culture and Society
Indian Costume.

Indological method में भारतीय इतिहास तथा महाकाव्य जैसे परम्परागत स्त्रोतों को आधार माना गया है। भारतीय समाज के अध्ययन में जाति व्यवस्था, नातेदारी प्रथा सौन्दर्य शास्त्र, वेशभूषा का जाति विभाजन, भारतीय नगर, ग्रामीण समाज में होने वाले परिवर्तन, सभ्यताओं एवं नागरिक समुदायों के अन्तः सम्बन्धों के अध्ययन, भारतीय आदिवासी तथा प्रजाति, भारतीय साधुओं और सभ्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन, ज्ञान तथा मूल्यों के सिद्धान्तों का अध्ययन किया।

घुरिये ने जातियों और जनजातियों में अन्तर भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक आधार पर किया गया सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन के अध्ययन हेतु विभिन्न संज्ञाओं एवं अवधारणाओं का प्रयोग किया। जो प्राचीन भारतीय इतिहास एवं महाकाव्यों से ली गई हों, घुरिये ने समाजशास्त्रीय रचनाओं में भारतीय विद्या उपागम का संतुलित रूप से प्रयोग किया।

घुरिये ने ऐतिहासिक तुलनात्मक पद्धति के अन्तर्गत भारत विद्या का प्रयोग करके साथ संस्थाओं का उद्भव, विकास, रूपान्तरण जैसी समस्याओं का समाधान किया। घुरिये ने शास्त्रीय उपागम द्वारा भारतीय साधुओं के उत्थान, इतिहास कार्य और वर्तमान में हिन्दू साधुओं के संगठनों का उल्लेख किया।

→ 3. इन्होंने अपनी पुस्तक Social Tensions in India- तनाव का ऐतिहासिक तुलनात्मक अध्ययन किया।

Cities and Civilization में नगरों के प्राकृतिक ~~विकास~~ इतिहास अमेरिका एवं इंग्लैण्ड के नगरों का इतिहास भारत के नगरों की स्थिति एवं उनकी वृद्धि, नगर राजधानियों के रूप में तथा विशाल नगरों के रूप में उल्लेख किया।

→ Caste class & occupation - जाति प्रथा के लक्षणों स्वरूपों विभिन्न युगों में जाति प्रजाति, भारत के बाहर जातियों के तत्वों, जाति की उत्पत्ति, अनुसूचित जातियों, व्यवसायों, वर्गों के कार्यों के भविष्य पर चर्चा।

→ The Scheduled Tribes - जनजातियों की समस्याओं एवं समाधान कुछ भारतीय जनजातियों के साथ संगठन, परिवार, नातेदारी विवाह, धर्म आदि के बारे में पूर्ण ब्यौरा प्रस्तुत किया।